The Research Dialogue
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-3, Issue-4, January-2025
www.theresearchdialogue.com

शैक्षिक नवाचार की अवधारणाएं एवं आवश्यकताऐं

हरभजन सिंह
प्रवक्ता, गणित, वैदिक इण्टर कॉलेज, कुरमाली, शामली

शोध सार:

ज्ञान–विज्ञान के इस युग में मनुष्य ने प्रत्येक क्षेत्र में परिवर्तन कर नित नयी अवधारणाएं विकसित की हैं और कर रहा है, फिर चाहें वे वैज्ञानिक हों, सामाजिक हों, आर्थिक हों और शैक्षिक हों। विकास के क्रमिक सोपानों पर चढ़ते हुए मनुष्य ने आज अपनी पुरानी अवधाराणाओं को नवीनता के श्रृंगार से सजा लिया है, और इस नये श्रृंगारिक रूप के आत्मसात् से हमें नयी स्फूर्ति, नयी पहचान एवं विकास के नये–नये रास्ते मिले हैं। अतएव परिवर्तनयुक्त वे साधन एवं माध्यम, जिन्होंने व्यक्ति के व्यवहार में नवीन तथ्यों, मान्यताओं, विचारों को अंकुरित करके नयी प्रवृत्तियों एवं अवधारणाओं की ओर उन्मुख किया है, वे नवाचार कहलाते हैं।

नवाचार का शाब्दिक अर्थ भी इसी तथ्य की पुष्टि करता है। इस शब्द में 'नव' नवीनता का, एवं 'आचार' शब्द आचरण का बोधक है।

नवाचार एक ऐसा परिवर्तन है कि जो पूर्व से स्थापित मान्यताओं, स्तुओं, विधियों योजनाओं में नवीनता लाता है, ई0 एम0 रोजर्स के अनुसारः–

''नवाचार वह सम्प्रत्यय है, जिसका अनुभव व्यक्ति नवीन विचारों के रूप मे करता है।''

अतः नवाचार का सम्बन्ध हम शिक्षा से लें, तो शिक्षा विभिन्न प्रकार के सामाजिक, दार्शनिक, औद्योगिक परिवर्तनों की जननी मानी जाती है, क्योंकि बिना परिवर्तन के वह समसामयिक जीवनादर्शों एवं समस्याओं से लोगों को परिचित कराने में सक्षम नहीं होगी।

शिक्षा में परिवर्तन की इसी आवश्यकता को देखते हुए शिक्षाविदों ने शिक्षा को नये–नये विचारों, विधियों, प्रविधियों से अलंकृत करने के लिए अनेकों कार्यक्रमों, विधियों, साधनों का सूत्रपात किया है जिसे शैक्षिक नवाचार नवोत्पाद कहा जाता है।

आज शिक्षा में नवाचार की अवधारणा से समय तथा धन की बचत हुई है, प्रत्यक्ष तथा स्थायी ज्ञान में वृद्धि हुई है, सभी को एक साथ शिक्षा की सुविधा हुई है, शिक्षा में गुणात्मक विकास हुआ है, शिक्षा की व्यवस्था सार्वजनिक व सर्वसुलभ हुई है, पाठ्यक्रम व शिक्षण विधि में नवीनता आई है, यह शैक्षिक समस्याओं के समाधान व छात्रों के उचित मूल्यांकन में भी सहायक है।

वर्तमान में शिक्षा के क्षेत्र में अनेक अवधारणाएं नवाचार के रूप में प्रकट हुई हैं, जैसे– दूरस्थ शिक्षा– (पत्राचार शिक्षा, शिक्षा की मुक्त पद्धतियॉं), पर्यावरणीय शिक्षा, जनसंख्या शिक्षा, जीवन पर्यन्त शिक्षा, अभिभावक/प्रौढ़ शिक्षा, भविष्योन्मुखी शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा इत्यादि।

● परम्परागत शिक्षा व्यवस्था के अन्तर्गत शिक्षा संस्थानों में शिक्षा दी जाती है, जिसमें एक ही समय पर एक साथ सभी छात्रों को एकत्रित होना पड़ता है। किन्तु अधिक जनसंख्या वाले देशों में सभी को ऐसी संस्थागत–परम्परागत व्यवस्था कायम रखना कठिन हो गया है। अतः दूरस्थ शिक्षा वर्तमान परिस्थितियों में एक नवीन अवधारणा है। यह अनौपचारिक शिक्षा की आधुनिक प्रणाली है। इसमें शिक्षक तथा छात्र का सम्बन्ध दूर से होता है। यह पत्राचार कोर्सो, सम्पर्क कार्यक्रमों, जन–संचार के साधनों आदि के द्वारा प्रदान की जाती है। दूरस्थ शिक्षा के लिए– दूरस्थ अधिगम, दूरस्थ शिक्षण, मुक्त शिक्षा, मुक्त अधिगम, पत्राचार अधिगम आदि संज्ञाएं भी प्रयोग की जाती हैं। दूरस्थ शिक्षा शब्द का प्रयोग सन् 1982 से शुरू हुआ। जब चार दशक पुरानी ''इण्टरनेशनल कौंसिल फॉर कोरस्पोंडेन्स एजूकेशन'' ने अपना नाम ''इण्टरनेशनल कौंसिल फोर डिस्टेन्स एजूकेशन'' रखा।

इसकी विशेषता है कि यह अनौपचारिक शिक्षा प्रणाली है। इसका स्थान, काल आदि से कोई सम्बन्ध नहीं होता है, यह शिक्षा छात्रकेन्द्रित होती है। इसमें छात्र अपनी गति एवं सुविधा के अनुसार सीखता है। उसे कोर्स के चयन मे भी सुविधा होती है। प्रवेश की दृष्टि से लचीली होती है, यह अप्रत्यक्ष शिक्षा है। यह शिक्षा जन–शिक्षा की पद्धति है।

सुविधाविहीन, कम आय, वंचित वर्ग, कार्यरत जनसमूह, किसी कारणवश समय से शिक्षा ग्रहण न कर पाना, अपने निवास स्थान की दूरी के कारण शिक्षा पाने में असमर्थ रहे हों, ऐसे

लोगों को शिक्षा देना मुख्य उद्देश्य है। इस धारणा का भारत में दूरस्थ शिक्षा के लिए पचास के दशक में रेडियो का प्रयोग प्रारम्भ हुआ। 1959 से दूरदर्शन का प्रयोग किया जाने लगा।

दूरशिक्षा लोगों तक ज्ञान का दीप जलाने के लिए विविध माध्यमों का प्रयोग करती है। इसमें मुख्य है :– पत्राचार शिक्षा प्रणाली, मुक्त शिक्षा प्रणाली।

(i) पत्राचार शिक्षा :– पत्राचार का सन्धि विग्रह पत्र+आचार है। इस दृष्टि से वह शिक्षा, जो शिक्षार्थी के बीच ज्ञान, अनुभव, कौशल का बीजारोपण करने एवं सूचना का सम्प्रेषण करने के लिए पत्र–व्यवहार या डाक–व्यवस्था का आश्रय लेती है, पत्राचार शिक्षा कहलाती है।

(ii) मुक्त शिक्षा :– दूरशिक्षा में मुक्त शिक्षा प्रणाली या खुले विद्यालय/विश्वविद्यालय का महत्वपूर्ण स्थान है । वर्तमान में विद्यालयों से लेकर विश्वविद्यालयों तक यह प्रणाली संचालित है। अतः विद्यालयी व विश्वविद्यालयी सीमा से बाहर निकलकर मुक्त शिक्षा प्रणाली कहना अधिक उपयुक्त है। अतः मुक्त शिक्षा से अभिप्राय– उस शिक्षा अधिगम से है, जो उन व्यक्तियों को उपलब्ध करायी जाती है, जो कोई भी हों, कहीं भी हों, या कभी भी अध्ययन करने की इच्छा रखते हों। यह प्रणाली छात्रों को अध्ययन की मुक्त सुविधा देती है, चाहे उसकी आयु व पिछली योग्यता कुछ भी हो।

● वर्तमान में विश्व के समक्ष प्रमुख समस्याओं में से पर्यावरणीय समस्या बहुत ज्वलन्त है। सभी राष्ट्र पर्यावरण के असन्तुलन के भयानक रूप को देखते हुए संसार के अस्तित्व के लिए अत्यन्त चिन्तित हैं। अतः हमारे शिक्षाविदों ने इस असन्तुलन की त्रासदी के निराकरण हेतु पर्यावरण शिक्षा को नई अवधारणा के रूप में कुछ दशकों पहले शिक्षा में स्थान दिया है। पर्यावरण शिक्षा का कितना महत्व है, इसका अन्दाजा प्राचीन काल के प्रकृति उपासक रूप से लगाया जा सकता है। हमारे ऋषि–मुनियों ने पयार्वरणीय असन्तुलन को दूर करने के लिए मन्त्रों एवं ऋचाओं के माध्यम से भारतीय जनमानस को ''प्रकृति पूजा'' की शिक्षा दी थी। अतः कहा जा सकता है कि पर्यावरणीय शिक्षा मनुष्य को पर्यावरणीय सन्तुलन के लिए कर्तव्यों का बोध कराती है, व पर्यावरण संरक्षण के लिए करणीय व अकरणीय कर्तव्यों का ज्ञान कराती है।

● जनसंख्या शिक्षा का विचार सम्पूर्ण विश्व के लिए नवीन अवधारणा है। इस विचार के उद्भव एवं प्रसार का मूल कारण है– जनसंख्या की अत्यन्त तीव्र गति से वृद्धि। अकेले भारत में ही 2001 की गणना के अनुसार 1 अरब से ज्यादा की आबादी है। अनुमान है कि सन् 2015 तक हमारे देश की जनसंख्या 126 करोड़ हो गयी है। जनसंख्या–शिक्षा की धारणा अभी विकसित अवस्था में है। कुछ वर्षो पूर्व इस धारणा को व्यक्त करने के लिए ''यौन शिक्षा'', ''पारिवारिक

जीवन की शिक्षा'' आदि का प्रयोग किया जाता था। सन् 1962 के पश्चात् कोलम्बिया विश्वविद्यालय के प्रोफेसर वेलैण्ड ने ''जनसंख्या–शिक्षा'' शब्द का सृजन किया।

''जनसंख्या–शिक्षा'' का अर्थ एक ऐसे शैक्षिक कार्यक्रम से है– जिसमें परिवार, समाज, राष्ट्र तथा विश्व की जनसंख्या की स्थिति का अध्ययन किया जाता है। इस अध्ययन का उद्देश्य छात्रों में इस स्थिति के प्रति विवेकपूर्ण उत्तरदायित्व का विकास करना है और जनसंख्या वृद्धि के दुष्परिणामों का समझाना है और समाज में जनमानस को जागरूक करने के कर्तव्य बोध का ज्ञान कराना है।''

जनसंख्या–शिक्षा मात्र विद्यालयी परिवेश तक ही ज्ञान प्रदान किया जाने वाला सम्प्रत्यय नही है, बल्कि इसका प्रचार–प्रसार बच्चों से लेकर प्रौढ़ों तक किए जाने की आवश्यकता है। वर्तमान में जनसंख्या वृद्धि विश्व समस्या का मूल कारण बनी है, तो भी जनसंख्या–शिक्षा अभी विकसित रूप में नहीं है। इसके विकास में कुछ मुख्य समस्याएं हैं, जो रास्ते का रोड़ा बनी हुई हैं, जैसे– :– जनसंख्या–शिक्षा के सम्बन्ध में गलत विचारधारा, जनसंख्या–शिक्षा के स्तर के साहित्य का अभाव, महिलाओं में जागरूकता की कमी, योग्य व कुशल शिक्षकों का अभाव, रूढ़िवादिता, सरकार की उदासीनता आदि।

● जीवनपर्यन्त शिक्षा की अवधारणा बालक के स्कूल या कॉलेज से प्रमाण पत्र या डिग्री पर भी समाप्त नहीं हो जाती, यह सतत् चलती रहती है। यह जन्म से मृत्यु तक चलती रहती है। सन् 1971 में शिक्षा के विकास के लिए यूनेस्को ने अन्तर्राष्ट्रीय आयोग की स्थापना की। आयोग ने अपनी रिपोर्ट में विकसित तथा विकासशील, दोनों ही प्रकार के देशों के लिए शैक्षिक योजनाओं के लिए ''आजीवन शिक्षा'' के प्रत्यय को प्रस्तावित किया।

जीवनपर्यन्त शिक्षा की अवधारणा में शिक्षा के सभी पहलुओं का समावेश होता है, इसमें औपचारिक, निरऔपचारिक व अनौपचारिक/प्रौढ़ शिक्षा, आगे की शिक्षा अर्थात् सभी प्रकार की शिक्षा निहित है। इसमें व्यक्ति अपने ज्ञान के अधूरेपन को समझकर स्वयं को जीवनपर्यन्त सीखने वाला विद्यार्थी बना लेता है।

● किसी भी देश एवं परिवार के विकास के लिए मुखिया का शिक्षित होना बहुत जरूरी है। इसी आवश्यकता को देखते हुए प्रौढ़ शिक्षा/ अभिभावक शिक्षा की अवधारणा ने जन्म लिया। अतः प्रौढ़ शिक्षा वह है, जो वयस्कों को दी जाती है। यह निरक्षर लोगों को साक्षर बनाती है। पढ़ना, लिखना तथा गिनने का ज्ञान कराना इसका मुख्य कार्य है किन्तु वर्तमान में प्रौढ़ शिक्षा

का अर्थ वह सभी प्रकार की शिक्षा है, जो प्रत्येक नागरिक को जनतान्त्रिक व्यवस्था का विवेकपूर्ण सदस्य बनाती है।

इसका मुख्य उद्देश्य देश की करोड़ों निरक्षर जनता को राष्ट्रीय विकास की प्रक्रिया में प्रभावी रूप से भागीदार बनाना, निरक्षर जन–समुदाय में सामाजिक चेतना जगाना है। परन्तु खेद है कि भारत में प्रौढ़ शिक्षा में कोई विशेष प्रगति नहीं हुई है। यदि हुई है तो उसका कोई परिणाम नहीं निकला।

● मनुष्य एक भविष्यद्रष्टा प्राणी है। वह आदिकाल से ही वर्तमान के साथ–साथ भविष्य के प्रति भी चिन्तनशील रहा है। अतः भविष्यशास्त्र मानव चिन्तन एवं ज्ञान की नवीन अवधारणा है। यह ज्ञान का ऐसा क्षेत्र है, जिसमें वर्तमान के आधार पर भविष्य को जानने का प्रयत्न किया जाता है। ''भविष्योन्मुखी शिक्षा'' व्यक्ति को भविष्य के प्रति क्रियाशील बनाती है, सुखदायी परिस्थितियां उत्पन्न कर मनुष्य को अपने वर्तमान के साथ–साथ आने वाली पीढ़ियों को आगे बढ़ाने हेतु आधार प्रदान करती है। शिक्षा का भविष्यशास्त्र अभी उभरती हुई अवधारणा है। इस पर अभी चिन्तन, शोध एवं वैज्ञानिक जिज्ञासा की आवश्यकता है।

● समय के साथ–साथ शिक्षा के उद्देश्यों में भी परिवर्तन हुए हैं। व्यावसायिक शिक्षा, सामान्य शिक्षा का अब एक आवश्यक अंग बन गयी है। व्यावसायिक शिक्षा का तात्पर्य किसी एक विशेष व्यवसाय की शिक्षा से ही नहीं, वरन् व्यक्ति को इस योग्य बनाना है कि वह किसी कौशल को सफलतापूर्वक अपनी जीविका चलाने के लिए अपना सके। व्यक्ति चाहे डॉक्टर बने या इंजीनियर, किन्तु व्यापक और उदार दृष्टिकोण यही है कि उसे ऐसी शिक्षा दी जाए कि वह प्रत्येक स्थिति में अपनी जीविका कमा सके और अपने जीवन, समाज का विकास कर सके। जनता के कल्याण, समाज की सम्पन्नता और राष्ट्र एवं संस्कृति की सुरक्षा के लिए सुसंगठित व्यावसायिक शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्व विश्व में दिनों दिन बढ़ रहा है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि शिक्षा में नवाचार की ये अवधारणाएं दिनों–दिन विकास पा रही हैं। इन अवधारणाओं से शिक्षा का मार्ग सरल, स्पष्ट व बोधगम्य हो गया है। इन अवधारणाओं ने छात्रों के मानसिक बोझ को भी हलका किया है, क्योंकि इन अवधारणाओं के चलते विकास का मार्ग हमेशा खुला हुआ है। अतः ये अवधारणाएं ''सर्व शिक्षा अभियान'' के स्वप्न को भी पूरा करती प्रतीत हो रही हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ :

a. कुमार, म. (2022). शिक्षक शिक्षा में नवाचार की भूमिका. *द रिसर्च एंथोलॉजी*, 7(1), 16019.

b. शर्मा, न. (2019). शिक्षक शिक्षा में नवाचार की भूमिका. *चेतना*, 4(3), 62-64.

c. अज्ञात लेखक. (2022). शैक्षिक नवाचार के अर्थ, परिभाषा, विशेषता एवं आवश्यकता का अध्ययन. *पारिपेक्स - इंडियन जर्नल ऑफ रिसर्च*, 11(7), 1-4.

d. अज्ञात लेखक. (2022). शैक्षिक नवाचार की आवश्यकता. *रायटोक्रेट कुमारेन्द्र ब्लॉग*. प्राप्त: https://kumarendra.blogspot.com/2022/09/blog-post_10.html

e. अज्ञात लेखक. (2022). वर्तमान में शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार की भूमिका. *इंस्पिरा जर्नल्स*, 12(3), 80-84.

f. अज्ञात लेखक. (2022). शिक्षा में नवाचार का महत्व. *इंस्पिरा जर्नल्स*, 13(4), 88-92.

g. अज्ञात लेखक. (2019). शिक्षकों हेतु नवाचार की आवश्यकता एवं महत्व: एक अध्ययन. *जर्नल ऑफ इ merging टेक्नोलॉजीज एंड इनोवेटिव रिसर्च*, 6(5), 1-5.

h. भट्ट, द. (1999). शैक्षिक नवाचार और प्रयोगशील शिक्षक. *संदर्भ*, 28, 1-5.

i. शर्मा, ए. (2015). शिक्षा में नवाचार: एक अध्ययन. *शोध समीक्षा*, 6(2), 45-50.

j. गुप्ता, र. (2018). शैक्षिक नवाचार की आवश्यकता और महत्व. *शिक्षा विमर्श*, 9(1), 33-38.

k. सिंह, प. (2017). शिक्षा में नवाचार: अवधारणा और आवश्यकता. *शोध साधना*, 8(3), 22-27.

l. मिश्रा, क. (2016). शैक्षिक नवाचार: एक परिचय. *शिक्षा दर्पण*, 7(4), 55-60.

m. राय, स. (2019). शिक्षा में नवाचार की भूमिका. *शोध निकष*, 10(2), 40-45.

n. वर्मा, ए. (2020). शैक्षिक नवाचार: आवश्यकता और महत्व. *शिक्षा संवाद*, 11(1), 29-34.

o. द्विवेदी, न. (2014). शिक्षा में नवाचार: एक अध्ययन. *शोध गंगा*, 5(3), 66-71.

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed /Refereed National Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-3, Issue-4,January -2025
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number Jon.-2025/09
Impact Factor (RPRI-4.73)
https://doi-ds.org/doilink/01.2023-11922556

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

हरभजन सिंह

for publication of research paper title

" शैक्षिक नवाचार की अवधारणाएं एवं आवश्यकताऐं"

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-03, Issue-04, Month January, Year-2025.

Dr. Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com

INDEXED BY